Page-1

Unit- 1

* अस्मिता की समझ *

अर्थ :- अस्मिता मन का वह भाव या मनोवृत्ति है जिसके तहत एक व्यक्ति अपनी अलग एक विशिष्ट सत्ता दावा करता है। यानि वह अपने मौजूद होने का दावा करता है वह अपनी पहचान का दावा करता है। यह एक किस्म का अहं-भाव, निजत्व का भाव है, अपनी होने की चेतना है है, अपनी सत्ता का भाव है जो अंतिम तौर पर अपनी पहचान के रूप में अभिव्यक्त होता है।

अस्मिता' में अस्तित्व बोध की प्रधानता होती है, अर्थात व्यक्ति और समुदाय समाज में अपनी विशेष अस्मिता को बनाए रखना चाहते हैं। परिवेश के साथ अलगाव की भावना व्यक्ति में अस्मिता का प्रश्न उठाती है। अतः व्यक्ति समाज में रहते हुए अपनी इच्छानुरूप सुरक्षित एवं सम्मानित जीवन जीना चाहता है।

'अस्मिता शब्द के व्युत्पत्तिपरक अर्थ के विषय में विभिन्न विद्वानों ने अपने मत दिये हैं।-

वामन शिवराम आप्टे के अनुसार - "अस्मिता शब्द का निर्माण अस्मि + तल + ताव से हुई है, जिसका अर्थ है - 'अहंकार'। 'आदर्श हिन्दी शब्द कोश' में भी अस्मिता शब्द के लिए अहंकार, मोह आदि अर्थ दिए गए हैं।

'अस्मि' शब्द अस + मिन से बना है। अस्मि अर्थात मैं हूँ। 'अस्मि' की भाववाचक संज्ञा 'अस्मिता' है। इस शब्द में स्वत्व का बोध होता है। यह एक ऐसा दायरा है जिसके तहत व्यक्ति और समुदाय यह बताते हैं कि वे खुद को क्या समझते हैं। अस्मिता का यह दायरा अपने-आप में एक बौद्धिक ऐतिहासिक और मनोवैज्ञानिक संरचना का रूप ले लेता है, जिसकी रक्षा करने के लिए व्यक्ति और समुदाय किसी भी सीमा तक जा सकते हैं।

उपर्युक्त अर्थों के आधार हम कह सकते हैं कि 'अस्मिता' शब्द जहाँ निजत्व का बोध करवाता है, वहीं जीवन के अन्य पहलुओं से भी इसका संबंध रहता है जो समय-समय पर अपना रूप बदलते रहते हैं, व्यक्ति और समुदाय अस्मिता को प्राप्त करने के लिए संघर्षरत रहते हैं और अस्मिता के प्रति जागरूकता इन्हें दिशाहीन होने से बचाती है।

आधुनिक युग में व्यक्ति को अस्मिता - प्राप्ति के संघर्ष करना पड़ रहा है,

अस्मिता - प्रपीत के संघर्ष की शुरुआत अपने वंचित, पीड़ित और प्रताड़ित होने के अहसास से शुरू हो जाती है जिससे अपनी पहचान को प्राप्त करना सबसे बड़ा उद्देश्य हो जाता है।

प्राय: अस्मिता का प्रश्न जब उठता है तो समाज में झेले गए अपमान और उपेक्षा से उठता है, जिससे सभी उपेक्षित लोगों ने मनुष्य की सामान्य परिभाषा के साथ जोड़कर अपने को बचाने का प्रयास हमेशा किया है।

निष्कर्ष रूप में यही कहा जा सकता है कि अस्मिता प्रपीत का संघर्ष प्रताड़ना झेलने और अपमान होने पर उभरता है और अंतत: एक दिन अपने पहचान को प्राप्त करने के लिए उग्र रूप धारण करता है।

=